Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 3 | ISSUE : 2 | FEB 2017

एलोरा में कैलाश मंदिर गुफा संख्या 16 : एक अध्ययन

डॉ. दीपक कुमार भट्ट [1]

[1] सहायक प्रोफेसर (पेंटिंग विभाग) सीवीएम कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, सीवीएम विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्या नगर, आनंद, गुजरात.

ABSTRACT

महाराष्ट्र के औरंगाबाद से 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एलोरा की गुफाएं हिन्दू ,जैन एवं बौद्ध धर्मावलम्बियों का पवित्र स्थल है। मंदिर का निर्माण 757-783 ई. के बीच हुआ था, जब कृष्ण प्रथम ने राष्ट्रकूट राजवंश पर शासन किया था। इसे भगवान शिव के घर कैलाश पर्वत की याद दिलाने के लिए बनाया गया है। यह एक ही चट्टान को काटकर बनाया गया है। भारतीय इतिहास की इस अवधि के दौरान प्रचलित धार्मिक सद्भाव को प्रदर्शित करती हैं। कैलाश मंदिर (गुफा 16) अपने आकर्षक अनुपात, विस्तृत कारीगरी, स्थापत्य सामग्री, मूर्तन और रॉक-कट वास्तुकला के मूर्तिकला अलंकरण के कारण द्रविड़ वास्तुकला का एक उल्लेखनीय उदाहरण है।

Keywords: पल्लव कला, कैलाशनाथ, कांचिपुरम,चट्टान, पत्थर, कैलाश मंडप कलश, द्वीप, नंदी, वास्तुशिल्प, एलोरा, शिल्पांकन, शिव मूर्तिकला, कट-आउट ,द्रविड़ शैली

मूल आलेख-

एलोरा गुफाओं में शिवजी का अस्तित्व वर्चस्व के स्वरुप में है। क्यूंकि यहाँ पर शिवजी को विविध रूपों में उकेरा गया है I भगवान शिव को पार्वती एवं नंदी के साथ तो कभी नृत्य करते हुए उत्कीर्ण किया है, उनके नृत्य का प्रमुख ध्येय जीव मात्र को माया और कर्मबन्धन से मुक्त करना था जिन कलाकारों ने यहाँ मूर्तिकला का यह जीवंत संसार उकेरा है वो निश्चय ही ऋषितुल्य होंगे।

ऐसा माना जाता है कि एलोरा में कैलाश मंदिर पहले पूरी तरह से सफेद प्लास्टर से ढका हुआ था जो की कैलाश पर्वत जैसा दिखता था इसलिए इसे कैलाश मंदिर नाम दिया गया है। समस्त विश्व में शिव को चट्टान काटकर, तराशकर संरचनाएं बनाई गई है, यह एक सामान्य तकनीक है जिसे 'कट-इन' तकनीक कहा जाता है। जबकि कैलाश मंदिर एक मात्र मंदिर है जो 'कट-आउट' तकनीक से बनाया गया है। एलोरा अपनी मूर्तिकला के लिए विश्व में बेजोड़ है। आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रकूट राजाओं द्वारा बनाया गया कैलाश मन्दिर अपनी भव्य वास्तुकला के लिये विश्व प्रसिद्ध है। अत्यंत जटिल चट्टानों को उपर से नीचे की तरफ काट कर इतना सुन्दर कलात्मक वास्तु निर्माण अन्यत्र दुर्लभ है। इसके अंदर खुले विशाल प्रांगण है। प्रधान मन्दिर ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है। यत्र-तत्र हाथी, सिंह जैसे विशाल वन्य जीवों की पूर्णाकार मूर्तियां हैं। यह विशाल मंदिर चार स्तंभों पर आधारित हैं। इसका नंदी मंड़प पट्टदकल के विरुपाक्ष मंदिर के अनुरूप है। यह पल्लव शैली में निर्मित है। पल्लव वास्तुकला ने उत्तरोत्तर चट्टानों को काटकर बनाए मंदिरों से लेकर अखंड रथों तक विकसित होकर नये संरचनात्मक मंदिर बनाने का मार्ग प्रशस्त किया।

पल्लव काल की वास्तुकला में मंदिर के शिखर पर एक कलशनुमा आकार बनाया जाता है, फिर अलग अलग भागो का निर्माण किया जाता है। रथ निर्माण पल्लवों की महत्वपूर्ण देन हैं। (पल्लवों की स्थापत्य शैली धार्मिक भावनाओं से प्रेरित प्रतित होती है।) पल्लव राजा महेन्द्र वर्मन के समय वास्तुकला में मंड़प निर्माण प्रारंभ हुआ। नरसिंह वर्मन ने महाबलीपुरम में रथ निर्माण किया। पल्लव के बाद दक्षिण भारत में 'द्रविड़ शैली' ने पट्टदकल कर्नाटक, उत्तरी व दक्षिणी भारत के वास्तुशिल्प रुपों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण किया। विरुपाक्ष मंदिर दक्षिणी द्रविड़ शैली में बना है। वीरुपाक्ष मंदिर के शिलालेखों के अनुसार; चालुक्य पल्लवों को हराने के बाद वहां के कलाकारों को पट्टदकल लाए। धवलीकर का मानना है कि चालुक्यों को हराने के बाद कृष्ण उनके क्षेत्र में स्थित वीरुपाक्ष मंदिर से प्रभावित हुए होंगे। परिणामस्वरूप वह वीरुपाक्ष के वास्तु मूर्तिकारों को लाया और एलोरा में कैलाश मंदिर के निर्माण में लगा दिया। मंदिर में गैर-राष्ट्रकुट शैलियों की उपस्थिति का श्रेय चालुक्य और पल्लव कलाकारों की भागीदारी को दिया जा सकता है।

कैलाश मंदिर मंदिर के प्रांगण के भीतर दो संरचनाएँ हैं। जैसा कि शिव मंदिरों में पारंपरिक रूप से इसका निर्माण किया जाता है, पवित्र बैल (नंदी) की एक छवि लिंगम वाले केंद्रीय मंदिर के सामने होती है। गुफा संख्या-16 में, नंदी-मंडप और मुख्य शिव मंदिर प्रत्येक लगभग 7 मीटर ऊंचे हैं, और दो मंजिलों पर बने हैं। नंदी मंडप की निचली मंजिलें दोनों ठोस संरचनाएं हैं, जिन्हें विस्तृत चित्रण नक्काशी से सजाया गया है। मंदिर के आधार पर नक्काशी की गई है जिससे पता चलता है कि हाथी इस समस्त मंदिर को अपनी पीठ पर उठाये हुए है। प्रांगण में दो ध्वजस्तंभ (ध्वजदंड वाले स्तंभ) हैं। कैलाश मंदिर के स्तम्भ तथा अर्ध स्तम्भ द्रविड़ शैली में निर्मित है। एक स्थान पर अपनी पूरी ताकत से कैलासा पर्वत को उठाने का प्रयास करते रावण की भव्य मूर्ति भारतीय कला में एक मील का पत्थर है।

कला इतिहासकारों के अनुसार, राजमिस्त्री और मूर्तिकार एक साथ मिलकर काम करते थे। जैसे ही एक टीम चट्टान को बाहर निकालती, दूसरी टीम सभी विवरणों को तराशना शुरू कर देती। चूँकि इसे ऊपर से नीचे तक तराशा गया था, इसलिए कारीगरों को बैठने के लिए पर्याप्त जगह मिल गई, इस प्रकार मचान की आवश्यकता नहीं पड़ी। इसके अतिरिक्त, यह दावा किया गया है कि आर्किटेक्ट्स के पास पहले से ही एक योजना और एक कामकाजी मॉडल था। कैलास और पट्टडकल में विरुपाक्ष मंदिर के बीच आश्चर्यजनक समानताओं के कारण, आमतौर पर यह माना गया है कि जिन कारीगरों ने बाद की संरचना का निर्माण किया था, उन्हीं कारीगरों ने पहले की नक्काशी भी की होगी। प्रारंभिक चालुक्य उदाहरण ने किसी प्रकार की प्रेरणा के रूप में काम किया होगा।

जैसा कि विद्वानों ने चर्चा की है, कैलास मंदिर के निर्माण में पहाड़ी से समकोण पर तीन विशाल खाइयाँ खोदना शामिल था, जिन्हें पहाड़ी के आधार के स्तर तक लंबवत रूप से काटा गया था। इस ऑपरेशन ने आंगन के आकार को रेखांकित किया और साथ ही बीच में चट्टान का एक बड़ा अलग समूह या "द्वीप" खड़ा कर दिया, जो 200 फीट से अधिक लंबा, 100 फीट चौड़ा और इसके शीर्ष पर 100 फीट ऊंचा था। पौराणिक प्रौद्योगिकी के बारे में भी मुख्यधारा की चर्चाएँ हैं जिनमें चट्टानों को वाष्पित करने की क्षमता थी। हालाँकि, इनमें से किसी भी परिकल्पना का समर्थन करने वाला कोई विश्वसनीय स्रोत नहीं है।

एक वास्तुशिल्प गणना के अनुसार, इन खाइयों को खोदकर लगभग चार लाख टन फीट चट्टानें हटाई गई। यह पहेली बनी हुई है कि निकाले गए इतने टन पत्थर कहां गए। साथ ही, चट्टानों को कहीं न कहीं फेंक दिया गया होगा, लेकिन हमें आस-पास चट्टानों के ढेर होने का कोई सबूत नहीं मिलता। हमारे पास अभी भी इस बारे में बात करने के लिए कोई विश्वसनीय स्रोत नहीं है कि चट्टानें कहां गईं या उनका उपयोग कैसे किया गया। यह आश्चर्य की बात है की प्राचीन समाजों ने ऐसे चमत्कार का निर्माण कैसे किया जिसे आधुनिक तकनीक के साथ आज भी ऐसे मंदिर का निर्माण करना चुनौतीपूर्ण है।

निष्कर्ष :

निसंदेह भारतीय कला संस्कृति का गौरव कैलाश मंदिर मूर्तिकला और स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। विश्व की यह अमूल्य प्राचीन धरोहर आने वाली पीढ़ी को सदैव प्रेरणा देती रहेगी।

1

2

REFERENCES

1. विकिमीडिया कॉमन्स

2. प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति

3. प्राचीन भारत

4. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला का इतिहास पृष्ठ सं -578

5. निकिता राठोड: मनिफेस्टेशन ऑफ़ अनमनिफेस्टेड शिवा स्कल्पचर ऑफ़ कैलाश टेम्पल

6. अमर उजाला फीचर डेस्क

7. **India.com**